रिकार्ड– जले न क्यों परवाना..... ओमशांति प्रातःक्लास 23.12.67

ओमशांति। रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप समझाय रहे हैं अर्थात् भगवान पढ़ा रहे हैं। रुहानी स्टुडेंट उन स्कूलों में जो बच्चे पढ़ते हैं वह हैं आसुरी सम्प्रदाय के। आगे तुम आसुरी वा रावण सम्प्रदाय के थे। अभी रामराज्य में चलने लिए 5विकारों रूपी रावण पर जीत पाने पुरुषार्थ कर रहे हो। जो यह नालेज नहीं प्राप्त करते हैं वह आसुरी नालेज ही पढ़ते हैं। उन्हों को समझाना पड़ता है तुम रावण राज्य में हो। खुद समझते नहीं हैं। तुम अपने मित्र–सम्बंधी आदि को कहते हो हम बेहद के बाप से पढ़ते हैं तो ऐसे नहीं कि वह निश्चय करते हैं। कितना भी बाप कहे या भगवान भी कहे तो भी निश्चय नहीं करते। नये को तो यहां आने का हुकुम नहीं है। बिगर चिट्ठी वा बिगर पूछे कोई आ भी नहीं सकते ;परंतु कहां2 कोई आ जाते हैं। यह भी कायदे का उल्लंघन है। एक2 का पूरा समाचार ,नाम आदि लिख पूछना होता है। उनको भेज देवें। फिर बाबा कहते हैं भल भेजो। अगर आसुरी दुनियां के स्टुडेंट होंगे तो बाप समझावेंगे वह पढ़ाई तो असुर पढ़ाते हैं। यह ईश्वर पढ़ाते हैं। उस पढ़ाई से पाई पैसे का दर्जा मिलता है। भल कोई बहुत बड़ा इम्तहान पास करते हैं फिर भी कहां तक कमाते रहेंगे। विनाश तो सामने खड़ा है। नैचुरल कैलेमिटीज भी आने वाले हैं। यह भी तुम समझते हो। जो नहीं समझते हैं उन्हों को फिर बाहर विजिटिंग रूम में बिठाय समझाना होता है। यह है ईश्वरीय पढ़ाई। इसमें निश्चय बुद्धि ही विजयंति होंगे अर्थात् विश्व पर राज्य करेंगे। रावण सम्प्रदाय वाले तेा यह जानते ही नहीं। इसमें बड़ी खबरदारी चाहिए। परमिशन बिगर कोई भी अंदर आ नहीं सकते। यह कोई घूमने–फिरने की तो जगह नहीं है। थोड़े ही समय में कायदे बहुत कड़े हो जावेंगे ;क्योंकि यह है होलिएस्ट ऑफ द होली। शिवबाबा को इंद्र भी कहते हैं ना। यह इंद्र सभा है। 9रत्न अंगूठी में भी पहनते हैं। उन रत्नों (में) नीलम भी होता है। पन्ना ,माणिक भी होता है। यह सब नाम रखे हुए हैं। परियों के भी नाम हैं ना। तुम परियां उड़ने वाले आत्माएं हो। तुम्हारा ही वर्णन है ;परंतु आसुरी सम्प्रदाय इन बातों को कुछ भी समझते नहीं हैं। वह है आसुरी मिशन। दोनों आकर इकट्ठे हुए हैं। तो रत्न जब डालते हैं उनमें कोई पुखराजफिरोज भी होते हैं। कोई का दाम हजार रुपया तो कोई का दाम 10/20 रुपया है। बच्चों में भी नम्बरवार हैं। कोई तो पढ़कर मालिक बन जाते हैं। कोई तो पढ़कर फिर दास–दासियां बन जाते हैं। राजधानी स्थापन होती है ना। तो बाप बैठ पढ़ाते हैं। इंद्र भी इनको ही कहा जाता है। यह है ज्ञान वर्सा। ज्ञान तो सिवाय बाप के कोई दे न सके। तुम्हारी एमऑब्जेक्ट यह है। निश्चय हो जाये ईश्वर पढ़ाते हैं फिर वह पढ़ाई को छोड़ेंगे? जो होंगे ही पत्थर बुद्धि उनको कब तीर लगेगा ही नहीं। आकर चलते2 फिर गिर पड़ते हैं। 5विकार आधा कल्प के शत्रु हैं। देहाभिमान में आकर थप्पड़ मार देते हैं। फिर आश्चर्यवत सुनन्ती,कथन्ती.....हो जाते। माया बड़ी दुस्तर है। एक ही थप्पड़ से गिरा देती है। समझते हैं हम कब नहीं गिरेंगे। फिर भी माया थप्पड़ लगा देती है। यहां स्त्री–पुरुष दोनों को पवित्र बनाया जाता है। सो तो ईश्वर के सिवाय कोई बना न सके। यह है ईश्वरीय मिशन। बाकी सब हैं आसुरी मिशन। बाप को खेवैया भी कहा जाता है। तुम हो सेना। खेवैया आते हैं सभी नईया को पार लगाने। कहते भी हैं सच्च की नईया झूलेगी ;परंतु डूबेगी नहीं। कितने ढेर के ढेर मठ–पंथ हैं। ज्ञान और भक्ति की जैसे लड़ाई होती है। कब भक्ति की भी विजय होंगे। ज्ञान की भी विजय होंगी। भक्ति के तरफ भी देखो कितने बड़े2 योद्धे हैं। ज्ञान मार्ग के तरफ भी कितने2 बड़े2 योद्धे हैं। अर्जुन ,भीम .....आदि नाम दिखाते हैं। यह तो सब कहानियां बैठ बनाई हैं। गायन तो तुम्हारा ही है। हीरो–हीरोईन का पार्ट तुम्हारा ही है। हीरो–हीरोईन का पार्ट तुम्हारा ही अब बज रहा है। इस समय ही युद्ध चलती है। तुम्हारे में भी बहुत हैं जो इन बातों को बिल्कुल ही समझते नहीं। अच्छे2 होंगे उनको ही तीर लगेगा। फिर थर्ड क्लास तो बैठ भी न सके। दिन–प्रतिदिन बहुत कड़े कायदे होते जावेंगे। पत्थरबुद्धि जो कुछ भी नहीं समझते उनका तो यहां बैठना भी बेकायदे है। यह हॉल बहुत होलियेस्ट

है। पोप को होली कहते हैं। यह तो है होलिएस्ट ऑफ दी होली। बाप कहते हैं इन सभी का मुझे कल्याण करना है। यह सब विनाश हो जाने वाले हैं। यह भी कोई थोड़ी ही समझते हैं। भल सुनते हैं ;परंतु एक कान से सुन दूसरे से निकाल देते हैं। न कुछ धारण कराते हैं, न कुछ धारण करते हैं। ऐसे गूंगे–बोरे भी बहुत हैं। यह दुनियां ही बंदरों की है ना। हियर नो ईविल..... .....बंदर का चित्र दिखाते हैं ;परंतु यह तो मनुष्य के लिए ही कहा जाता है। मनुष्य इस समय बंदर से भी बदतर है। नारद की भी एक कहानी बैठ बनाई है। उनको बोलो तुम अपने सिकल तो देखो। 5विकार तो अंदर में नहीं है। जैसे सा. होता है। जैसे हनुमान का भी सा. होता है ना। हनुमान की पूजा करने वाले भी बहुत हैं। हनुमान बंदर की पुजारी तो वह भी बंदर आसुरी सम्प्रदाय ठहरे ना। किसको कहो आसुरी सम्प्रदाय तो बिगर पड़े। अब बंदरों की लड़ाई आदि की तो कोई बात ही नहीं है। सिलान में जाते हैं वहां बहुत बड़े2 पत्थर पड़े हैं समुद्र में। कहते हैं बंदरों ने पुल बांधी। बंदर सम्प्रदाय भी बातें ऐसी ही करते हैं। बात मत पूछो। बाप कहते हैं कल्प2 यह होता है। सतयुग में यह कुछ भी बातें नहीं होंगी। यह पुरानी दुनियां ही खतम हो जावेगी। जो पक्के निश्चय बुद्धि होंगे वह ही समझते हैं। कल्प पहले भी हमने राज्य किया था। बाप कहते हैं बच्चे अभी दैवी बुद्धि धारण करो। कोई बेकायदे काम नहीं करो। स्तुति–निंदा सबमें धैर्य धारण करना है। क्रोध न होना चाहिए। नहीं तो आदत पड़ जावेगी। तुम असुर से देवता बनते हो तो कितना नशा होना चाहिए। तुम कितने स्टुडेंट हो। भगवान बाप पढ़ाते हैं। वह डायरैक्शन देते हैं। कई यह भी भूल जाते हैं ;क्योंकि साधारण तन है ना। शिवबाबा को तो याद ही नहीं करते। इस देहधारी मनुष्य को ही समझ लेते हैं। बाप कहते हैं इस देहधारी को देखकर तुम इतना उठ नहीं सकेंगे। आत्मा को देखो। आत्मा यहां भृकुटि में रहती है। आत्मा ही सुनकर कांध हिलाती है। हमेशा आत्मा से बात करो। तुम आत्मा इस शरीर रूपी तख्त पर बैठी हो। तुम तमोप्रधान थे, अब सतोप्रधान बनना है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करने से देह का भान टूट जावेगा। आधा कल्प का देहाभिमान रहा हुआ है। इस समय सभी देहाभिमानी हैं। अब बाप कहते हैं देही अभिमानी बनो। आत्मा ही सब कुछ धारण करती है। खाती–पीती सब कुछ करती आत्मा ही है। बाप को तो अभोक्ता ही कहा जाता है। वह है निराकार। यह शरीरधारी सब कुछ करते हैं। वह खाता–पीता कुछ भी नहीं। अभोक्ता है। तो इसकी फिर वह लोग कॉपी करते हैं। कितना मनुष्यों को ठगते हैं। तुम्हारी बुद्धि में अभी सारा ज्ञान है। मनुष्यों की बुद्धि तो बिल्कुल ही तमोप्रधान है। जनावर से भी बदतर है। कल्प पहले जिन्होंने समझाया था वह ही समझेंगे। बाप कहते हैं मैं ही कल्प2 आकर तुमको पढ़ाता हूं और साक्षी हो देखता हूं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जो कुछ पढ़ा था वही पढ़ेंगे। टाइम लगता है। रीढ़–बकरियों को देवता बनाना यह डिफिकल्ट है। कहते हैं कलियुग की आयु 40हजार वर्ष है। तो घोर अंधियारे में हैं ना। इसको अज्ञान अंधियारा कहा जाता है। भक्ति और ज्ञान में रात–दिन का फर्क है। यह भी समझने की बात है। बच्चे बड़े खुशी में भरे हुए होने चाहिए। सब कुछ है। कोई तमन्ना नहीं। जानते हैं कल्प पहले मिसल हमारे सभी मनोकामनायें पूरी होती हैं। इसलिए पेट भरा रहता है। जिनको ज्ञान नहीं है उनका थोड़े ही पेट भरता है। खुशी जैसी खुराक नहीं होती। जन्म–जन्मांतर की राजाई मिलती है। दास–दासी बनने वालों को इतनी खुशी नहीं रहेगी। पूरा महावीर बनना है। माया हिलाय न सके। बाबा कहते हैं आंखों की बड़ी सम्भाल रखनी है। क्रिमिनल दृष्टि न जाये। स्त्री को देखने से चलायमान हो जाते हैं। अरे, तुम तो भाई–बहन हो। कुमार–कुमारियां हो ना। फिर कर्मइंद्रियां चंचलता क्यों करती हैं?बड़े2 लखपति–करोड़पतियों को भी माया खलास कर देती। गरीबों को भी माया एकदम मार देती है। 10वर्ष के अच्छे2 चलने वाले तो भी जैसे मुर्दे बन जाते हैं। फिर कहते हैं बाबा हमने धक्का खाया। अरे, 10वर्ष के बाद भी हार खा ली। लो, अब तो पताल

में गिर पड़े। ऐसे का तो फिर मुंह देखना भी अच्छा नहीं लगता। अंदर में समझते हैं इनकी अवस्था कैसी है। कोई2 तो बड़े अच्छे सर्विस करते हैं। तुम कन्याओं ने ही भीष्मपितामह आदि को बाण मारी है ना। गीता में थोड़ा–बहुत है। भगवत तो एकदम झूठा कहेंगे। यह तो है ही भगवानुवाच। अगर कृष्ण भगवान ने गीता सुनाई तो फिर ऐसे क्यों कहते मैं जो हूं, जैसा हूं कोई विरला ही जानते हैं। कृष्ण यहां होता तो पता नहीं क्या कर देते?कृष्ण का शरीर तो होता ही है सतयुग में। यह नहीं जानते कि कृष्ण के शरीर में मैं प्रवेश करता हूं। आत्मा तो वही है। जिसने कृष्ण का शरीर धारण कर राज्य लिया। उनके ही बहुत जन्मों के अंत में मैं प्रवेश करता हूं। कृष्ण के आगे तो झट सब भाग जावे। पोप आदि आते हैं तो कितनी झुण्ड जाकर इकट्ठी होती है। मनुष्य यह थोड़े ही समझते हैं कि इस समय सभी पतित तमोप्रधान हैं। कहते भी हैं हे पतित–पावन आओ ;परंतु समझते नहीं हैं कि हम पतित हैं। बच्चों को बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। बाबा की बुद्धि तो सब सेंटर के अनन्य बच्चों तरफ चली जाती है। जब जास्ती अनन्य बच्चे यहां आते हैं तो फिर यहां देखता हूं। नहीं तो बाहर में बच्चों को याद करना पड़ता है। उनके आगे ज्ञान डांस करता हूं। मैजॉरिटी ज्ञानी तू आत्मा होती है तो मजा भी आता है। भक्तिमार्ग के कितने ढेर शास्त्र हैं। उन सबमें अगड़म–बगड़म है। वह तो जन्म जन्मांतर से भक्ति करते आये। ज्ञान क्या चीज होती है यह कोई भी समझते नहीं हैं। बाप को ही नहीं जानते हैं। गुरू लोग (अपन) को कितना अथॉर्टी समझते हैं। पुरुष भी स्त्री का पति ,गुरू अपन को समझते हैं। जो कुछ हम कहें वह करो। बच्चियों पर कितने अत्याचार होते हैं। कल्प2 सहन करना पड़ता है। ज्ञान में आने से फिर भक्ति छूट जाती है। घर में समझो मंदिर हो। स्त्री–पुरुष दोनों भक्ति करते हैं। स्त्री को ज्ञान की चटक लग जाती है और भक्ति छोड़ देती है तो कितना हंगामा हो जावेगा। विकार में भी न जाये। शास्त्र आदि भी न पढ़े तो झगड़ा हो जावेगा। इसमें विघ्न बहुत पड़ते हैं और सतयुग आदि में जाने लिए पति कब रोकते नहीं हैं। यहां है पवित्रता की बात। पुरुष नहीं रह सकते तो जंगल में चले जाते हैं। स्त्रियां कहां जायें। स्त्रियों के लिए कहते हैं वह नर्क का द्वार है। बाप कहते हैं यह तो स्वर्ग का द्वार है। तुम बच्चे अभी स्वर्ग स्थापन करते हो। इनसे पहले नर्क के द्वार थी। अभी स्वर्ग की स्थापना होती है। सतयुग है स्वर्ग का द्वार। कलियुग है नर्क का द्वार। यह समझ की बात है। तुम बच्चे भी नम्बरवार पुरुषार्थ ही .....हो। भल पवित्र तो रहते हैं। बाकी ज्ञान की धारणा नम्बरवार होती है। तुम तो निकल आय यहां बैठे ; परंतु अब तो समझाया जाता है गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहना है। उन्हो को तो तकलीफ होती है। यहां रहने वालों को तो कोई तकलीफ नहीं। तो बाप समझाते हैं कमल फूल समान गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहो। सो भी इस जन्म की बात है। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। आत्मा ही सुनती है। आत्मा ही यह बनी है। आत्मा ही जन्म जन्मांतर भिन्न2 चोला पहनती है। अब हम आत्माओं को वापस जाना है। बाप से योग लगाना है। मूल बात यह है। .....हम आत्माओं से ही बात करता हूं। आत्मा भृकुटि के बीच में रहती है। इन आर्गन्स द्वारा ही सुनती है। आत्मा इनमें न होती तो यह शरीर मुर्दा बन जाता। बाप कितना वंडरफुल ज्ञान आकर देते हैं। परमात्मा बाप बिगर तो यह बातें कोई समझा न सके। सन्यासी आदि कोई आत्मा को थोड़े ही जानते हैं, न देखते ही हैं। वह तो आत्मा सो परमात्मा कह देते हैं। कहां फिर कहते हैं आतमा में लेप–छेप नहीं लगता है। शरीर को धोने गंगा में जाते हैं। यह नहीं समझते आत्मा ही पतित बनती है। आत्मा ही सब कुछ करती है। बाप समझाते रहते हैं यह मत समझो हम फलाना हूं। यह फलाना है। सब आत्मा हैं। जात–पात का कोई भेद नहीं रहना चाहिए। गवर्मेंट कोई धर्म को नहीं मानती ;परंतु धर्म तो है ;लेकिन बाप समझाते हैं अपन को आत्मा समझो। फलाने धर्म का हूं यह भेद नहीं रखना है। ओम।